15. बंगाल में ब्रिटिश साम्राज्य की स्थापना

बंगाल के स्वतंत्र राज्य की स्थापना मुर्शीद कुल खाँ (177-27) में की थी। उसके बाद क्रमशः शुजाउद्दीन (1727-40) तत्पश्चात् सरफराज खाँ (1740-41) में बंगाल के नबाब बने। सरफराज खाँ को 1741 में गिरीया के युद्ध में मारकर नायक सूबेदार अली वर्दी खाँ ने बंगाल की नबावी पर कब्जा कर लिया। अली वदी खाँ (1741-56) तक नबाव रहा।

- चूंकि अली वर्दी खांन का कोई पुत्र नहीं था उसकी केवल तीन बेटिया थी। बड़ी लड़की घसीटी बेगम का पत्नी ढाका का नबाब था। दूसरी बेटी का पति पूर्णिया का नबाव था जिसका बेटा का नाम शौकत जंग अली वर्दी खाँ ने अपनी सबसे छोटी बेटी के पुत्र सिराजुद्दौला को नबाव घोषित किया।

इधर 1756 में ब्रिटेन में सप्तवर्षी युद्ध की शुरूआत हुई फलतः भारत में आंग्ल फ्रांसीसी संघर्ष प्रारम्भ हो गया अब कलकत्ता में स्थित ब्रिटिश कोठी "फोर्ट विलियम" के गर्वनर कैप्टन डेक ने सुरक्षात्मक कार्यों से फोर्ट विलियम की घेरा बन्दी कर ली। जिससे सिराजुददौला क्रुध हुआ। और उसने डेक को घेरा वन्दी हटाने का आदेश दिया और उसने ड्रेक के इन्कार करने पर 20 जून 1756 को सिराजुददौला ने फोर्ट विलियम पर आक्रमण करके उस पर कब्जा कर लिया तत्पश्चात् सिराजुद्दौला ने कलकत्ते के शासक अपने विश्वसनीय अधिकारी मानिक चन्द्र को सौंपा स्वयं अपनी राजधानी मुर्शिदाबाद लौट गया। इसी दिन फोर्ट विलयम में एक दुर्भाग्य पूर्ण (काल कोठी की घटना) घटी जिसके तहत 18×14×10 फीट के एक कमरे में 146 अंग्रेजों को बन्द कर दिया जिससे अधिकांश लोग दम घुटने से मर गये केवल 23 लोग जीवित बचे। जीवित लोगों में हाल वैल भी था। जिसने इस घटना का अपनी पुस्तक इलाइव द वंडर में दिया। वस्तुतः विलेक हॉल की घटना में कोई भी सच्चाई नहीं थी। यह मनगणत रूप से नबाव को बदनाम करने की कोशिश थी। इतने छोटे कमरे में इतने लोगों को बन्द नहीं किया जा सकता। थोड़ी देर के लिए काल कोठी के सत्य मान लिया जाए तो नबाव की कोई भी प्रत्यक्ष भूमिका नहीं थी।

- काल कोठी की घटना का समाचार कलकत्ता से मद्रास पहुँचा और वहाँ से क्लाइव के नेतृत्व में थल सेना और वाटसन के नेतृत्व में नौ सेना कलकत्ता पहुँची।
- 2 जनवरी 1757 क्लाइव ने मानिक चन्द्र को रिसवत देकर अपनी और मिला लिया। तथा कलकत्ते का शासन आने हाथ में लेकर युद्ध की घोषणा कर दी। लेकिन इस समय भारत पर अहमदशाह अब्दाली के आक्रमण का खतरा मडँरा रहा था और सिराजुद्दौला उत्तरी भारत की राजनीति में व्यस्त था और उसने क्लाइव से संधि कर ली।

(9 फरवरी 1757 अलीनगर की संधि) क्लाइव बनाम सिराजुद्दौला:

संधि की शर्त के अनुसार सिराज ने अंग्रेजों को पुराने व्यापारिक अधिकार सौंपे 3 लाख रूपये की छत्र पूर्ति की कलकत्ता की घेरा बंदी की अनुमति प्रदान की।

अगले चरण में क्लाइव का षड़यन्त्रः

चूंकि क्लाइव को नबाव सिराजुद्दौला के अधिकारियों को अपनी ओर मिलाने तथा षड़यन्त्र करने को काफी समय मिल गया। इस क्रम में उसने नबाव के सेनापति मीरजाफर, नबाव के कोषाध्यक्ष रायदुर्लभ, कलकत्ते के अधिकारी मानिक चन्द्र बंगाल के वेंकर फतेहचन्द्र जिसकी उपाधि जगतसेठ थी। तथा इसकी तुलना ब्रिटिश इतिहास कार वर्क ने बैंक आँफ इंग्लैण्ड से की थी। तथा कलकत्ते के व्यापारी अमीनचन्द्र को अपनी ओर मिलाकर नबाव के विरूद्ध युद्ध की घोषणा कर दी।

प्लाशी/प्लासी का युद्ध (23 जून 1757): बंगाल नबाव बनाम रार्बट क्लाइव

- बंगाल नबाव सिराजुद्दौला सेनापति मीरजाफर सेना 45000
- रार्वट क्लाइव सेनापति किल पैट्रिक सेना 3200 (1100 ब्रिटिश सैनिक तथा 2100 भारतीय)
- नबाव की ओर से मीरमदान लड़ते हुए मारा गया तथा मोहन लाल घायल हुआ।
- क्लाइव विजयी रहा।
- भागते हुए सिराजुद्दौला की हत्या मीरजाफर के बेटे मीरन ने कर दी।
- वस्तुतः प्लासी का युद्ध एक मात्र छोटी सी सैनिक झड़प थी क्लाइव की विजय, नबाव के अधिकारियों के विश्वासघात का परिणाम थी। क्लाइव ने किसी कुशल सैनिक नेतृत्व का परिचय नही था। इस प्रकार प्लासी के युद्ध का सामरिक प्रभाव नगण्य था। लेकिन हाँ आर्थिक दृष्टि से प्लासी के युद्ध के पश्चात् भारत में वह युग आरम्भ हो गया। जिसमें व्यापार के साथ राज्य विस्तार भी जुड़ गया। भारत में उपनिवेशवाद की नींव पड़ी। प्लासी के युद्ध का विवरण इतिहासकार गुलाम हुसैन ने अपनी पुस्तक सियार-उल-मुत्खैरीन में दिया हैं।

प्लासी के बाद:

मीरजाफर (1757-60): सिराजुद्दौला के बाद क्लाइव ने मीरजाफर को बंगाल की नबावी सौंपी। मीरजाफर ने क्लाइव को 2 लाख 34 हजार पांउड व्यक्तिगत रूप में दिये। तथा ईस्ट इंडिया कंपनी के 24 परगने की जगह दी। लेकिन बाद में क्लाइव की बढ़ती हुई माँगों से परेशान होकर मीरजाफर ने डचों से मिलकर अंग्रेजो की विरूद्ध षड़यन्त्र किया परन्तु क्लाइव ने नवम्बर 1759 वेदरा के युद्ध में डचों को अंतिम एवं निर्णायक रूप से पराजित कर दिया।

- मीरजाफर को क्लाइव का सियार/गीदड़/गधा कहा जाता है।
- ब्रिटिश इतिहासकार मॉलेसन ने कहा मीरजाफर सोने से भरी ऐसी थैली है जिसमें जब चाहा हाथ डाला और जितना जहा ले लिया।
- 25 फरवरी 1760 में क्लाइव वापस इंग्लैण्ड चला गया। बंगाल के कार्यालय के रूप में हॉलवैल की नियुक्ति हुई। अगस्त 1760 में इस पद पर वेन्सिटॉर्ट की नियुक्त हुई।

वेन्सिटॉर्ट ने भारत आते ही मीरजाफर के दामाद मीरकासिम से एक गुप्त संधि की जिसे रक्तहीन क्रांति अथवा BLOOD LESS REVOLUTION अगस्त क्रांति कहा गया। संधि के तहत मीरकासिम का बंगाल नबाव बनना तय हुआ। वेन्सिटॉर्ट ने मीरजाफर का महल घेरा लेकिन मीरकासिम ने 15000 हजार रूपये पेन्सिन प्रतिमाह के बदले मीरकासिम के पक्ष में बंगाल की नबावी त्याग दी।

मीरकासिम 1760-1763:

मीरजाफर के बाद बंगाल की गद्दी पर मीरकासिम आसीन हुआ। मीरकासिम ने बंगाल की नबावी के बदले वेन्सिटॉर्ट को 5 लाख 10 हजार नगद तथा हॉलवेल को 2 लाख 10 हजार नगद व्यक्तिगत तौर पर दिये। साथ ही साथ मीरकासिम ने ईस्ट इंडिया कंपनी को वर्दवान, मिदनापुर, चँटगाँव की जमींदारी सौंपी।

मीरकासिम एक योग्य नबाव था। उसने अंग्रेजों के प्रत्यक्ष से बचने के लिए उसने अपनी राजधानी मुर्शीदावाद से मुंगेर (पटना के आस-पास) स्थान्तरित कर दी। तथा उसनी सेना को आधुनिक यूरोपीय ढंग से प्रशिक्षित करने के लिए एक जर्मन सैन्य अधिकारी "वाल्टर रीन हार्ड" की नियुक्त की।

- मीरकासिम ने मुंगेर में बन्दूके एवं तोपो का एक कारखाना भी स्थापित किया तथा उसका अधीक्षक एक फ्रांसीसी सैन्य अधिकारी जनरल ब्रॉयन को नियुक्त किया।
- चूंकि मीरकासिम एक योग्य नबाव था। और अब तक मुगल सम्राट द्वारा ईष्ट इण्डिया कंपनी के जारी किये कर मुक्त फरमानो (दशतको) का दुरूपयोग बड़ गया था। ईष्ट इण्डिया कंपनी कर्मचारी अपने व्यक्तिगत व्यापार के लिए भी इन दशकों को प्रयोग करते थे। इस प्रकार भारतीय व्यापारियों का अत्यधिक नुकसान होता था। अत: मीरकासिम ने दशतको का दुरूपयोग रोकने के लिए समस्त आंतरिक कर हटा दिये। इस प्रकार अब भारतीय व्यापारी भी अब अंग्रेजों के समान हो गये। लेकिन अंग्रेज अपने लिए विशेषाधिकार चाहते थे। अत: ब्रिटिश सेनापति लिए ने पटना पर आक्रमण कर दिया। अगला घटना क्रम में मेजर एडम्स ने मीरकासिम को छ: छोटी-छोटी सेन्य झड़पो में पराजित किया। अब मीरकासिम ने भागकर अवध नबाव शुजाउदौला की शरण ली। जहाँ पर मुगल सम्राट शाहआलम द्वितीय (1759-1806), उत्तराधिकारी संघर्ष के चलते अवध में पहले से ही मौजूद था।
- उधर अंग्रेजो ने बंगाल में मीरजाफर को पुन: नबाव बना दिया जो जुलाई 1763 से फरवरी 1765 तक अपनी मृत्यु पर्यन्त तक इस पद पर आसीन रहा।

बक्सर का युद्ध (23 अक्टूबर 1764):

बंगाल के नबाव मीरकासिम ने भागकर शुजाउदौला की शरण ली तथा उसने एक समझौता किया कि युद्ध के पश्चात् मीरकासिम बिहार को शुजाउदौला को सौंप देगा और विजय के बाद 3 करोड़ रूपया नगद भी देगा। साथ-साथ में सेना के खर्च के लिए 11 लाख रूपया प्रतिमाह शुजाउदौला को देगा।

बक्सर का युद्ध:

- बक्सर के युद्ध में ब्रिटिश सेना ने निर्णायक रूप से अवध नबाव को पराजित किया। मीरकासिम जान बचाकर दिल्ली की और भाग गया। जहाँ 1777 में उसकी मृत्यु हो गयी।
- शुजाउदौला एवं शाहआलम द्वितीय ने आत्मसमर्पण कर दिया। इस प्रकार बक्सर की विजय ने प्लासी की विजय पर मोहर लगा दी।
- इसी बीच मई 1765 में क्लाइव पुन: बंगाल का गर्वनर बनकर भारत आया। और उससे भारत आते ही बक्सर में पराजित शक्तियों के साथ ब्रिटिश संबंधों को पराजित किया।

12 अगस्त 1765 इलाहाबाद की संधि : इस संधि के तहत मुगल सम्राट शाह आलम ने क्लाइव को (ईस्ट इंडिया कंपनी) बंगाल, बिहार, उड़ीसा की दीवानी सौंप दी (दीवानी अर्थात् करो को वसूली का अधिकार)

- बदले में शाहआलम ने 26 लाख रूपये प्रतिवर्ष पेंशन के बदले अंग्रेजों के कैदी के रूप में इलाहाबाद के किले में रहना स्वीकार किया।
- इसी संधि से ईस्ट इंडिया कंपनी ने शाहआलम से उत्तरी

सरकार के चार जिले (MARS) अर्थात् मुस्तफाबाद नगर (M),एलोर (A), राजमहेन्द्री (R) शिकाकोल (S)भी प्राप्त कर लिये।

- **इतिहास गुलाम हुसैन ने इस संधि में लिखा- "इस संधि को क्रियान्वित करने में उतना भी वक्त नही लगा जितना एक गधा खरीदने में लगता हो।"**
- अगले क्रम में 16 अगस्त 1765 को क्लाइव ने अवध नबाव शुजाउदौला से एक पूरक संधि की जिसे अवध की संधि अथवा फैजाबाद की संधि कहा गया। इस संधि के तहत युद्ध के हरजाने के तौर पर 50 लाख रूपये ईस्ट इंडिया कंपनी को दिये- 25 लाख रूपये तुरंत तथा बाकी 25 लाख रूपये 5 किस्तों में दिये।
- इस रकम की अदायगी के बदले शुजाउदौला को उसका समस्त प्रदेश वापस कर दिया लेकिन ईस्ट इंडिया कंपनी ने इलाहाबाद और कड़ा के क्षेत्र उससे लेकर शाहआलम को दे दिये।
- उधर फरवरी 1765 में बंगाल नबाव मीरजाफर की मृ त्यु हो चुकी थी। अत: 1765 में क्लाइव ने उसके अयोग्य पुत्र नज्मुदौला को बंगाल का नबाव घोषित किया वहाँ उसे 50 लाख रूपये वार्षिक पेंशन देकर बंगाल के समस्त अधि कार अपने हाथों में केन्द्रित कर लिये। और यही से बंगाल से द्वैध शासन की शुरूआत होती है। द्वैध शासन के एक पंक्ति में परिभाषित करे तो यह एक अधिकार रहित उत्तरदायित्व, तथा उत्तरदायित्व रहित अधिकार था।
- क्लाइव ने नज्मुदौला को नाम मात्र का नबाव बना रहने दिया इस प्रकार अंग्रेजी संरक्षण में रहने वाला बंगाल का पहला नबाव नज्मुदौला था और यही से बंगाल में द्वैध शासन प्रणाली की शुरूआत होती है।
- तत्पश्चात् सैफुदौला (1766-70) बंगाल का नबाव बना इसके काल में नबाव की पेंशन घटाकर 53 लाख रूपये से 12 लाख रूपये प्रतिवर्ष कर दी गयी।
- बंगाल का अंतिम नबाव मुबारकदौला (1770-75) इसके काल में नबाव की पेंशन घटाकर 10 लाख रूपये कर दी। तथा 1775 वोंरिग हैस्टिन ने बंगाल की नबावों की समाप्ति की घोषणा कर दी।
- बंगाल के नबावो का क्रम:
  1. मुर्शीदकुली खाँ
  2. शुजाउद्दीन
  3. पुत्र सरफराज खाँ
  4. अली वर्दी खाँ की हत्या करके नबाव
  5. सिराजुदौला (उसका नाती)
  6. मीरजाफर (उसका सेनापति)
  7. मीरकासिम (दामाद)
  8. मीरजाफर (पुन:)
  9. नज्मुदौला (पुत्र)
  10. सैफुदौला
  11. मुबारकुदौला

द्वैध शासन: क्लाइव ने नज्मुदौला को बंगाल का नाम मात्र का नबाव बनाये रखते हुए 'बंगाल के समस्त दीवानी व निजामत के अधिकार स्वयं अपने हाथों में केन्द्रित कर लिए। दीवानी से हमारा अभिप्राय पूरे प्रांत की मालगुजारी एवं राजस्व पर अधिकार से है तथा निजमत से हमार तात्पर्य संपूर्ण प्रांत की सुरक्षा एवं प्रशासनिक व्यवस्था से है' इस संदर्भ में उपरोक्त प्रावधानों के तहत मुगल सम्राट शाहआलम को 26 लाख प्रतिवर्ष तथा बंगाल नज्मुदौला को 53 लाख प्रतिवर्ष देने के पश्चात् बंगाल के समस्त भूराजस्व ए० मालगुजारी पर ईस्ट इंडिया कंपनी का अधिकार हो गया साथ ही साथ प्रशासनिक अधिकार व सुरक्षा भी अंग्रेजों के हाथ में आ गयी।

क्लाइव ने दीवानी का कार्य देखने के लिए कुछ उप दीवान नियुक्त किये: बंगाल के लिए रज्जा खाँ, बिहार के लिए सिताब खाँ, उड़ीसा के लिए राय दुर्लभ तथा इनके माध्यम से अंग्रेजो ने भू राजस्व वसूली का अधिकार सर्वाधिक बोली लगाने वाले ठेकेदारों को सौंप दिया। इस प्रकार प्रतिवर्ष पहले से अधिक बोली लगाये जाते रहने के कारण कंपनी के भू राजस्व में वृद्धि होती चली गयी। ईष्ट इंडिया कंपनी के बिहार, बंगाल, उड़ीसा की दीवानी मिलने से पहले बंगाल का राजस्व 80 लाख रूपये था वही 1766-67 में बड़ाकर यह लगभग 24 लाख रूपये से अधि क हो गया। फलत: कृषको की स्थिति बदतर होती चली गयी। 1770 में भारत का प्रथम मानव जनित अकाल बंगाल में पड़ा। इस अकाल में बंगाल की एक तिहाई आबादी (1 करोड़) मारी गयी। इतिहास कार KM पणिक्कर ने लिखा कि 1765-72 तक बंगाल में लुटेरा राज्य चलता रहा।

- बंगाल में प्रतिक्रिया स्वरूप किसानो ने विद्रोह कर दिया जिसे सन्यासी विद्रोह के नाम से जाना गया। यह विद्रोह 1800 ई. तक चलता रहा इसके प्रमुख नेता थे, मजमूनशाह, मूसा शाह, चिराग अली, भवानी पाठक, दैवी चौदरानी। इस विद्रोह का प्रमुख नारा था ऊँ वन्दे मातरम्।
- संयासी विद्रोह का वर्णन वकिंग चन्द्र चटर्जी ने आनन्दमठ में दिया है। आनन्द मठ को बंगाल राष्ट्र भक्ति में वाइविल कहा जाता है। आनन्द मठ की रचना वकिंम चन्द्र चटर्जी ने

सितम्बर–अक्टूबर 1874 में की थी। हमारा राष्ट्रीय गीत वन्दे मातरम् इसी पुस्तक से लिया गया है।

- वन्दे मातरम् की गायन अवधि 65 sec है।
- सर्वप्रथम वन्दे मातरम् को लय बध गाने का का श्रेय यदुनाथ भट्टाचार्य को हैं।
- कांग्रेस के कलकत्ता अधिवेशन 1896 में इसे सर्वप्रथम रवीन्द्र नाथ टैगोर ने गाया। कांग्रेस के इस अधिवेशन के v è; {k Fks N रहीमतउल्ला सयानी थे।
- 7 सितम्बर 1905 काँग्रेस के बनारस अधिवेशन में, जिसकी अध्यक्षता गोपाल कृष्ण गोखले ने की थी, में वन्देमातरम् को राष्ट्रगति के रूप में स्वीकार किया गया। राष्ट्रपति के शताब्दी समारोह 2005 में आरंभ होकर सितम्बर 2006 में समाप्त हुए।
- वर्तमान सितार वाधक स्वर्गीय गीत पन्नालाल घोष द्वारा वन्दे मातरम् को राग सारग में स्वर वध किया गया है। और वर्तमान में यही गाया जाता है। क्लाइव ने दोहरी प्रशासन व्यवस्था के अतंर्गत प्रशासन के समस्त अधिकार, राजस्व वसूली एवं न्यायिक अधिकार अपने पास रखे। तथा आंतरिक शान्ती व्यवस्था तथा फौजदारी एंव समस्त उत्तरदायित्व नबाव पर छोड़ रखे। इस प्रकार क्लाइव ने प्रशासन का अधिकार तो ले लिया। लेकिन उत्तरदायित्व स्वीकार नहीं किया।

अर्थात् दोहरे प्रशासन को एक पंक्ति में इस प्रकार परिभाषित किया जा सकता है "उत्तरादायित्व रहित अधिकार एवं अधिकार रहित उत्तरदायित्व" दोहरी प्रशासन को बनाये रखने एवं नबाव की नाममात्र की सत्ता बनाये रखने के निम्न कारण थे।

1. यदि ईस्ट इंडिया कंपनी स्पष्ट रूप से बंगाल की सत्ता अपने हाथ में ले लेती तो उसका वास्तविक स्वरूप सामने आ जाता और समस्त भारतीय राज्य एवं देशी रियासतें अंग्रेजो के विरूद्ध एकजुट हो जाती
2. अन्य यूरोपीय कंपनीय जैसे पुर्तगाली, फ्रांसीसी, डच आदि मालगुजारी एंव चुंगी आदि कर ईस्ट इंडिया कंपनी को प्रदान न करती। जो उन्हें नबाव के फरमानों के अनुसार प्रदान करने होते थे।
3. ईस्ट इंडिया कंपनी के पास इतने प्रशिक्षित कर्मचारी, व अधिकारी भी नही थे जो बंगाल के शासन का प्रत्यक्ष रूप से भार सभाल पाते। जो अधिकारी थे भी वे भारतीय रीतिरिवाजों, लोकपरंपराओं, कानूनों से अनभिस थे।
4. साथ ही साथ क्लाइव खूब समझता था कि वह बंगाल की सत्ता स्वयं अपने हाथ में ले लेता तो ब्रिट्रेन की संसद कंपनी के कार्यों में हस्तक्षेप करना प्रारंभ कर देती।